

गांधीनगर अभयारण्य में लाए जाएंगे चीते

चर्चा में क्यों?

हाल ही में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने मंदसौर ज़िले के [गांधी नगर अभयारण्य](#) में जल्द ही [चीते](#) लाए जाने की घोषणा की।

मुख्य बिंदु

- मुख्यमंत्री ने [वशिव बाघ दविस](#) के अवसर पर यह घोषणा की।
- 26 जनवरी, 2022 को [भारत और दक्षिण अफ्रीका](#) ने चीतों के पुनर्वास की सुविधा के लिये एक [समझौता ज्ञापन \(MoU\)](#) पर हस्ताक्षर किये।
 - यह समझौता ज्ञापन (MoU) [भारत में चीता की सुरक्षित संख्या](#) स्थापित करने की भारत की प्राथमिकता सुनिश्चित करता है।
 - इस प्रयास से [महत्त्वपूर्ण एवं व्यापक संरक्षण](#) की उम्मीद है।
 - इसका प्राथमिक लक्ष्य भारत के पर्यावास के भीतर [चीता की व्यवहार्य भूमिका को पुनः स्थापित करना](#) और स्थानीय समुदायों की आजीविका तथा आर्थिक स्थिति में सुधार करना।

गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य

- अवस्थिति**
 - वर्ष 1974 में अधिसूचित, यह अभयारण्य पश्चिमी मध्य प्रदेश के [मंदसौर और नीमच](#) ज़िलों में वसित है, जो राजस्थान की सीमा से लगता है।
 - [चंबल नदी](#), अभयारण्य को लगभग दो समान भागों में विभाजित करती है, जिसमें गांधी सागर बाँध अभयारण्य के भीतर स्थित है।
- पारस्थितिकी तंत्र**
 - इसके पारस्थितिकी तंत्र की विशेषता इसके [पर्वतीय क्षेत्रों](#) के साथ-साथ [उथली मृदा](#) है, जो [सवाना पारस्थितिकी तंत्र](#) को संदर्भित करती है।
 - इसमें [शुष्क पर्णपाती वृक्षों](#) एवं झाड़ियों से घरे [खुले घास स्थल](#) शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, अभयारण्य के भीतर नदी घाटियाँ सदानीरा हैं।
- चीतों के लिये आदर्श पर्यावास**
 - [केन्या](#) के सुप्रसिद्ध [मसाई मारा](#) राष्ट्रीय अभयारण्य से समानता के कारण, जो अपने सवाना वन एवं वन्यजीवन की विविधता के लिये विख्यात है, यह अभयारण्य चीतों के लिये एक उपयुक्त पर्यावास है।



